International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 5; September 2018; Page No. 24-26

लोक की गायिका : गायिका का लोक – कबूतरी देवी

सुमन जोशी
शोध छात्रा, इतिहास विभाग, डी. एस. बी परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड, भारत ।

सारांश
प्रस्तुत लेख में उत्तराखंड की प्रथम सिद्धहस्त लोकगायिका कबूतरी देवी के जीवन, उनके गायन और परिस्थिति को दर्शाने का प्रयास किया गया है। उनके लोकगीतों का कुमाऊँ की संस्कृति पर पड़ने वाले प्रभावों को दिखाया जा रहा है। जिससे उन्हें आगे की पीढ़ियों को उनके मूल रूप में हस्तांतरित किया जा सके।

मूल शब्द : लोकगायिका, कबूतरी देवी, कुमाऊँ की संस्कृति।

प्रस्तावना

देवभूमी उत्तराखंड आदिकाल से ही ऋषि मुनियों की साधना स्थली रही है। जिनका पुराणों में सन्दर्भ प्राप्त होता है। उत्तराखंड की भूमि अपनी विविधताओं के कारण अद्वितीय है, जहाँ एक ओर यहाँ की अलौकिक प्राकृतिक सुन्दरता है तो दूसरी ओर यहाँ की पारंपरिक संस्कृति जिससे पर्वतीय समाज समाज का निर्माण हुआ है, या दूसरे शब्दों में यूं कह सकते हैं कि पर्वतीय समाज की पहचान ही यहाँ की लोक संस्कृति है। कुमाऊँ क्षेत्र में लोक संगीत की समृद्ध परम्परा जिसमे धार्मिक, सामजिक एवं पौराणिक मान्यताओं का परिदृश्य प्राप्त होता है। किसी भी प्रदेश के संगीत के माध्यम से वहाँ की संस्कृति को जाना जाता है। यही कुमाऊँ क्षेत्र के लोक संगीत में भी है। समाज एवं संस्कृति एक-दूसरे के पूरक हैं। भारतीय संस्कृति विश्व की समस्त संस्कृतियों में सबसे प्राचीन है। संस्कृति का ही दूसरा नाम सुसंस्कृत एवं परिष्कृत समूह है। भारतवर्ष की मौलिक एकता सबसे पहले उसके सांस्कृतिक जीवन में व्यक्त हुई है। इस संस्कृति को एक शब्द में 'भारतीय संस्कृति' कह सकते है। स्थानीय भेदों के होते हुए भी भारतवर्ष के सभी प्रान्तों में यह भारतीयता समान रूप से पायी जाती है। अस्तु जाति, समाज व राष्ट्र के सामजिक मूल्यों, परम्पराओं एवं मान्यताओं के सर्वांगीण विकास के लिए जो सामूहिक चेष्टायें की जाती हैं, वही संस्कृति है।

कबूतरी देवी के गाये गीत मुख्यतः ऋतुरैण, न्योली व फाग (शगुन गीत) ही हैं, जो परंपरागत रूप से उन्हें विरासत में मिले थे। आकाशवाणी के लिए गाये उनके सभी गीत उन्होंने अपनी माँ से सीखे थे। कबूतरी देवी कुमाऊँ के परस्पर पूरक तीन समाजों की कला की वाहक है। कुमाऊँनी, नेपाली व फाग। इसके अलावा वह समकालीन लोकप्रिय हिन्दी गीतों को भी संजोए है। लोक परंपरा के गीतों को गाने की शौक़ीन, कबूतरी देवी की रूचि व उनके सुरीले कंठ को देख-सुन-समझकर इनके माता-पिता ने इन्हें लोकगीतों में प्रयुक्त होने वाले रागों का बोध बचपन में ही कराना शुरू कर दिया। खिलौनों से खेलने की उम्र में कबूतरी देवी अपनी अपनी छोटी-छोटी उँगलियों को हारमोनियम की स्वर कुंजियों में उलझाकर संगीत की विशिष्ट रचना-राग को समझने की भरपूर कोशिश करने लगी। किन्तु समाज में प्रचलित बाल विवाह की कुप्रथा के चलते इनके माता पिता ने 14 वर्ष की उम्र में सन् 1959 में पिथौरागढ़ जिले के दूरस्थ गाँव क्वीतड़ के प्रतिष्ठ लोक गायक-वादक दीवानी राम जिन्हें कबूतरी देवी 'नेताजी' कहती, उनके साथ कर दिया और इस तरह कबूतरी देवी काली कुमाऊँ से सोर घाटी आ गयी। स्व. दिवानी राम संगीत गायकी के लिए इन्हें प्रोत्साहित करते रहते थे। कबूतरी देवी ने आकाशवाणी केंद्र लखनऊ से 28 मई 1979 को स्वर परीक्षा पास की और अपनी सुरीली आवाज़ के कारण आकाशवाणी व दूरदर्शन केन्द्रों क माध्यम से देश-प्रदेश में छा गई। आकाशवाणी केंद्र लखनऊ, नजीबाबाद, अल्मोड़ा से इनके गीतों का बराबर प्रसारण आज भी किया जा रहा है।

उत्तराखंड की विभिन्न लोक विधाओं की गायकी में पुरुष गायकों की चली आ रही लम्बी परम्परा को तोड़ने वाली कबूतरी देवी को उत्तराखंड लोक परम्परा की पहली सिद्धहस्त लोकगायिका होने का गौरव प्राप्त है। जब कबूतरी देवी सोराली, कुमाऊँनी लोक परम्परा की विशिष्ट शैलियों के साथ लोक गायकी के शिखर पर चढ़ रही थी कि 30 दिसंबर, 1984 में उनके पति दीवानी राम की ह्रदय गति रुकने से मृत्यु हो गयी। उस वक्त कबूतरी देवी 40 वर्ष की थी। पति के असमय मृत्यु ने उन्हें बुरी तरह झकझोर दिया। वैधव्य के कठोर प्रहार ने इनकी लोक संगीत साधना को भारी क्षति पहुंचायी।

लोक परम्परा के पेशेवर गायक-गायिकाओं की बीच पली बढ़ी कबूतरी देवी लोक परम्परा के धुनों तथा लोकगीतों के रोमांचित करने वाले विस्मयकारी, पहलुओं के बारे में अपार अनुभव रखती है। इन्होने जहाँ एक ओर काली कुमाऊँ के लोकगीतों न्योली, फाग व ऋतुरैण लोकविधा को सँवार और पर्वतीय लोक मानस के अनुभव द्रुतलय के स्वनिर्मित लोकगीत कहरवा, झपताल में गायन अपनी गायकी को एक नया आयाम दिया, वहीं दूसरी ओर तीज-त्योहारों, ब्याह बारातों तथा मेलों के अवसरों पर महफिल गायन को नया अन्जाम दिया। ठुमरी गायन से आत्म विभोर कर लोक गायकी को नया मिज़ाज दिया और लोक परम्परा व लोक संस्कृति के मौखिक स्वरुप व शाश्वत मूल्यों को बचाने के लिए अपना अमूल्य योगदान दिया। 7 जुलाई, 2018 को कबूतरी देवी की मृत्यु हो गयी उन्हें सांस लेने में तकलीफ होती थी।

कबूतरी देवी की संगीत की शिक्षा आज उनकी अगली पीढ़ी में देखने को मिलती है। कबूतरी देवी की गायकी को आज उनकी बेटी हेमंती देवी आगे बढ़ा रही हैं। वह अपने परिवार के साथ पिथौरागढ़ से 8

किलोमीटर दूर गाँव सेरी कुमडार में रहती हैं। कबूतरी देवी के साथ वही कार्यक्रमों में जाती थी और उनका गाने में साथ भी देती थी। वह अपनी बेटी के साथ ही कुमडार रहती थी। हेमंती के एक बेटा सूरज कुमार व बेटी जानकी है तथा चंडाक के रहने वाले मुकेश व रिंकी भी बचपन से हेमंती के साथ ही रहते है और उन्हें ही अपनी माँ मानते हैं। इन चारों से एक बातचीत के आधार पर पता चला कि अभी सूरज व मुकेश मुम्बई में काम के साथ-साथ संगीत भी सीखते है और जानकी कबूतरी देवी के साथ ही ज्यादातर रहती थी और सीखती भी थी। पर इनको अभी किसी मंच और आर्थिक सहायता की आवश्यकता है जिससे ये कबूतरी देवी की देन को आगे बढ़ा सके। कबूतरी देवी अपने नाती पवनदीप राजन के बारे में बताते हुए कहती है कि उसने मेरा नाम रोशन किया। पवनदीप कबूतरी देवी की बहन का नाती है पर बहन का देहांत जल्दी हो गया था इसलिए वह उन्ही को अपनी नानी कहता है। बचपन में वह कबूतरी देवी के साथ ही रहता था और जहाँ भी कार्यक्रम में वह जाती पवनदीप भी उनके साथ जाता और तबला बजाता। उसने जो कुछ भी सीखा सब कबूतरी देवी ने ही उसे सिखाया है। जब पवनदीप राजन ने 'The Voice of India' का खिताब जीता तो उसने उस स्टेज पर भी यही कहा था। कबूतरी देवी बताती हैं कि जब पवनदीप जीता तो बहुत लोक मेरे घर मिठाई लेकर मुझे बधाई देने के लिए उपस्थित हुए। पवनदीप के साथ वह एक बार 'झूमिगो' की टीम के साथ पौढ़ी गढ़वाल भी गयी। वह पवनदीप की इस सफलता से बहुर खुश थी।

कबूतरी देवी द्वारा गाये गए लोकगीत

मैस दु:ख पड़ी ग्यान मेरी इजू
मैस दु:ख पड़ी ग्यान
(लखनऊ में कबूतरी देवी द्वारा गाया गया एक गीत)

लोक गायिका कबूतरी देवी को अब यह भी याद नहीं कि उन्होंने आकाशवाणी के लिए कितने गीत गाये थे। बचपन में ही घर में कबूतरी देवी ने सबकी संगत में फाग, चैती, पंछे पहाड़ी, तीनताल, झपताल, ठुमरी, दादरा, प्रभाती सब सीख लिया था। कबूतरी देवी ने ''जय माता कनारा.....'', "ठंडो पाणी काली गंगा मूल मां.....",गीत गाये हैं।
उन्होंने ऋतुरैण व नयोली गीत भी गाये हैं जिसके बोल हैं – "नी काटो नी काटो मेरी बाना....." इसके अलावा और कुछ गाने हैं जो उन्होंने गाये है – "म्यार पहाड़ हो ऊँचा डाना.....", "आकाश नीलो नीलो कालो छ बादल....", "अलख की बाँसुरी सुनों री सखीरी....", "गेला पाताल...", "न्योली बासी छ....." आदि। इंटरव्यू के दौरान उन्होंने कुछ गाने गाये जो इस प्रकार हैं –

ए संज्या झुकि गेछ भगवान , नीलकंठ हिमाला |
ए संज्या झुकि गेछ हो रामा, अगास रे पताला|
ए संज्या झुकि गेछ भगवाना ,नौ खंडा धरति मांझा |
नौ खंडा धरति हो रामा , तीन हो रे लोका |
के संज्या झुकि गेछ भगवाना ,के संज्या झुकि गेछ |
के संज्या झुकि गेछ रामा ,कृष्ण ज्यु की द्वारिका |
हो के संज्या झुकि गेछ हो रामा , यो रंगीली वेराटा |
के संज्या झुकि गेछ भगवाना , यो पंचवटी मांझा |
के संज्या झुकि गेछ हो रामा ,रामाज्यु की अजुध्या |
के संज्या झुकि गेछ भगवाना , कौरवुं को बंगला |
के संज्या झुकि गेछ हो रामा ,यो गेली समुन्दरा|
के संज्या झुकि गेछ भगवाना ,पंचचुली का धुरा |
के संज्या झुकि गेछ हो रामा ,हारीहरा हरिद्वारा|
के संज्या झुकि गेछ भगवाना ,सप्ता रे सिन्धु ,पंचा रे नंदा |
ए संज्या झुकि गेछ हो रामा ,सुनै की लंका धामा ||

1960 के दशक की इस कलाकार ने इस गीत को आकाशवाणी नजीमाबाद के लिये भी गाया था।

भारत सरकार व उत्तराखंड सरकार द्वारा पुरुस्कृत

कबूतरी देवी पर्वतीय समाज के एक आदिम हिस्से की विरासत हैं। कबूतरी देवी से भले ही आज के उत्तराखंडी युवा रूबरू नहीं होंगे, लेकिन एक समय में वह पहाड़ की आवाज हुआ करती थी। कबूतरी देवी को संगीत और गायन उनके परिवार से विरासत में मिला था जिसे आगे बढ़ाकर उन्होंने सभी का नाम रोशन किया। कबूतरी कुमाऊँ के परस्पर पूरक तीन समाजों की कला की वाहक है – कुमाऊँनी, नेपाली व फाग (संस्कार गीत)। वह पिछले 20 वर्षों से गुमनामी के अंधेरें में हैं। कुछ लोगों के व्यक्तिगत प्रयासों से उन्हें उत्तराखंड संस्कृति विभाग की मासिक 1000 रूपया पेंशन मिलने लगी थी जो अब बढ़कर करीब 3000 तक पहुँच गयी है। लेकिन जीवन की कठिनाइयाँ उन्हें अब भी घेरे हुए है। दुबली पतली काया तराशे हुए नैन नक्श, सुघड़ वेश-भूषा, मीठी सुसंस्कृत भाषा यही कबूतरी देवी का परिचय है। संगीत की औपचारिक तालीम न लेने पर भी उनका अनुभव सुर व ताल को अपनी अंगुली पर नचाता है। वह गाने के साथ स्वयं हारमोनियम बजाती है तो साथी तबला वादक को सही निर्देश भी देती हैं। दरअसल कबूतरी देवी का सम्बन्ध पहाड़ की उस परंपरागत गायकी से रहा है जिसे यहाँ की मूल कला भी कहा जा सकता है।
28 मई 1979 कबूतरी देवी आकाशवाणी की स्वर परीक्षा उत्तीर्ण की और अपना पहला गीत आकाशवाणी के लखनऊ केंद्र से गाया। यह सिलसिला चल पड़ा और फिर इन्होने आकाशवाणी के नजीबाबाद, रामपुर और बम्बई केन्द्रों से भी गाया। इनके गीतों का आकाशवाणी के कई अन्य केन्द्रों से भी प्रसारण हुआ। नजीबाबाद आकाशवाणी में तब 25 रुपया गीत मिलता था पर इन्हें 50 रूपये मिलते थे। वहीं से मिले सर्टिफिकेट की सहायता से बाजार (पिथौरागढ़ शहर) के संस्कृतीकर्मी हेमराज बिष्ट ने इनकी पेंशन लगवाई थी। देवसिंह मैदान में भी वही इन्हें ले गए। कबूतरी देवी ने उत्तराखंड के पिथौरागढ़, अल्मोड़ा, नैनीताल, काली कुमाऊँ, द्वाराहाट, जौलजीवी व देवधूरा इत्यादि स्थानों में कार्यक्रम प्रस्तुत किये। तब से ही समाज में उनका कोई न कोई संपर्क बना रहा। आकाशवाणी के लिए गाया उनका पहला गीत था सगुन दे सरस्वती लगन दे दाता एक शगुन गीत था।
लोक परंपरा के अनगिनत लोकगीतों को सुरीली आवाज देकर 'लोक' से उठाकर लोकप्रिय बना देने वाली लोक गायिका कबूतरी देवी के स्तुति योग्य प्रयास को रेखांकित कर, नवोदय पर्वतीय कला केंद्र पिथौरागढ़, इंदिरा कला राष्ट्रीय कला केंद्र नई दिल्ली, उत्तराखंड लोक भाषा मंच दिल्ली, पर्वत जन प्रकाशन जन समूह देहरादून, हिमालयी सरोकारी संस्था 'पहाड़' नैनीताल, मोहन उप्रेती लोक संस्कृति कला एवं विज्ञान शोध समिति अल्मोड़ा, यंग उत्तराखंड साईन, नगर पालिका परिषद् अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ और उत्तराखंड

महापरिषद, लखनऊ जैसी अनेक संस्थाएं इन्हें सम्मानित कर चुकी है। वर्ष 2016 में उत्तराखंडी लोक संगीत में अभूतपूर्व योगदान के लिए उत्तराखंड सरकार द्वारा कबूतरी देवी को "Lifetime achievement award" से नवाजा गया।

इसके अलावा युगमंच, नैनीताल के निर्देशक जहूर आलम जी व इस प्रोजेक्ट के संयोजक श्री संजय जोशी ने कबूतरी देवी के जीवन यात्रा को वीडियो फिल्म के जरिये सहेजने का प्रयास किया है। जिससे कबूतरी देवी के जीवन के साथ-साथ उनके संगीत की परंपरा को भी जानने व रेखांकित करने का मौका हमें मिलेगा।

निष्कर्ष

लोकगायिका कबूतरी देवी का नाम भले ही नई पीढ़ी के लिए अनसुना व अनजाना हो लेकिन पुरानी पीढ़ी के लोग रेडियो में लखनऊ से प्रसारित होने वाले उत्तराखंड कार्यक्रम व नजीबाबाद से बजाने वाले उन सुरीले सुरों को कभी नहीं भूल पाएंगे जिन्हें सुनने के बाद पहाड़ी जीवन के लोक रंग, संघर्ष, व्यथा व कष्ट की अनुभूती होती थी। उस दौर में कबूतरी देवी ने कुमाऊँनी गीतों के साथ-साथ उर्दू, हिंदी गज़ले व फिल्मी गीत गाकर भी वाहवाही बटोरी। विडम्बना यह रही कि पश्चिमी संगीत, ओडियो कैसेट व सीडी के इस दौर में कबूतरी देवी के लिए कोई जगह नहीं बची और लोक संगीत का एक युग गुमनामी के अँधेरे में खो गया।

पहाड़ के प्राकृतिक सौन्दर्य, पलायन व आजीविका के साधनों के कष्ट से उपजी व्यथा से लेकर मांगलिक गीतों को लोक विधाओं में पिरोने में सिद्धहस्त कबूतरी देवी पिथौरागढ़ जिले की नेपाल सीमा से सटे गाँव क्वीतड़ में दो जून की रोटी के लिए संघर्ष कर रहीं थी। कबूतरी देवी का व्यक्तित्व जो नमनीय है, वह केवल इस आधार को पुष्ट करता है कि दुसाँध (दो सांस्कृतिक अंचलों का जोड़) के सांगीतिक पक्ष की वह विशिष्ट कलाकार व धरोहर हैं। विशेष रूप से ऋतुरैण, फाग व न्यौली गायन के क्षेत्र में अपने अंचल की श्रेष्ठतम कलाकार है। इस महान कलाकार कबूतरी देवी को उत्तराखंड संस्कृति विभाग से हजार रुपये प्रतिमाह व बुजुर्ग कलाकारों को मिलने वाली पेंशन के लिए भी वर्षों तक जूझना पड़ा था।

कबूतरी देवी खुद एक बातचीत में यह स्वीकारती हैं कि 'गाने के लिए सांगत जरुरी है, संगत ना हो तो कैसे गाया जाय'। यह संगत उनके सन्दर्भ में सिर्फ तबला वादक की ही नहीं बल्कि और तमाम चीजों की भी है। जब रोज बरोज का जीवन चलाना ही मुश्किल हो तो गाने का मन कैसे बने। कबूतरी देवी के सन्दर्भ में यह भी खास बात है कि जिस कबूतरी को अक्षर का ज्ञान नहीं, जिसकी संगीत की शिक्षा भी टुकड़ों में हुई, वह संगीत के जरिये कैसे अपने को दुरुस्त रख पाती है। आज के आपाधापी भरे दौर और मोनो कल्चर के अन्धकार में डूबी उत्तराखंड की नई पीढ़ी के लिए कबूतरी देवी का नाम अनजान है लेकिन मोहन सिंह रीठागाड़ी, जीत सिंह नेगी, केशव अनुरागी, नरेन्द्र सिंह नेगी, गोपाल बाबू गोस्वामी, पाती राम नौटियाल, बीना तिवारी, दीवान सिंह डोलिया, शिव प्रसाद पोखरियाल, हीरा सिंह राणा, नईमा उप्रेती जैसे कलाकारों की पात में कबूतरी देवी का नाम हमेशा लिया जाएगा।

'पहाड़ो को ठंडो पाणी, के भली मीठी बाणी', 'आज पनी झौं-झौं, भोल पनी झौं-झौं, पोरखिन तें न्हें जोंला', 'हिमाल ह्युं को पफूलो, ठंडो पाणी कठ कालि गंगा मल में' जैसे उनके सदाबहार गीत और ग़जल व ठुमरी का उनका अनोखा पहाड़ी अंदाज, उनके न्यौली, चैती व ऋतुरैण के स्वर कभी भुलाए नहीं जा सकते।

सन्दर्भ

1. बिष्ट शेर सिंह, कुमाऊँ हिमालय : समाज एवं संस्कृति, अंकित प्रकाशन चन्द्रावली कालोनी पीलीकोठी, हल्द्वानी – 263139, 2008
2. बलूनी दिनेश चन्द्र, उत्तराखंड : उत्सव, परम्पराएं एवं रीतिरिवाज, प्रकाश बुक डिपो मुख्य कार्यालय बड़ा बाजार बरेली – 243003, 2011
3. पेठशाली जुगल किशोर , उत्तराखंड के लोक वाद्य, तक्षशिला प्रकाशन 2324761, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002, 2002
4. पेठशाली जुगल किशोर, लता कुंजवाल, कुमाऊँ के संस्कार गीत, तक्षशिला प्रकाशन 2324761, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002, 2003
5. शर्मा डी. डी. , लोकसाहित्य का आयामी परिदृश्य (उत्तराखंड के सन्दर्भ में), अंकित प्रकाशन चंद्रावती पीलीकोठी , हल्द्वानी – 263139, 2012
6. पोखरिया देवसिंह, कुमाऊँनी लोक साहित्य और कुमाऊँनी साहित्य , श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, द माल, अल्मोड़ा – 263601, 1994
7. चातक गोविन्द , भारतीय लोक संस्कृति का सन्दर्भ : मध्य हिमालय, तक्षशिला प्रकाशक 98-ए, हिन्दी पार्क, दरियागंज नई दिल्ली – 110002, 2014
8. मठपाल यशोधर, समवेत , श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, माल रोड, अल्मोड़ा – 263601, 1996
9. यजुर्वेदी सीता पाठक , उत्तराखंड संगीत एवं संस्कृति, बृहस्पति पब्लिकेशन, साहित्य संगीत संगम, दिल्ली – 110067, 2011
10. उत्तरा महिला पत्रिका : उमा भट्ट, नैनीताल, 2003
11. पहाड़ : शेखर पाठक 5/6 नैनीताल
12. जनपथ आजकल पत्रिका : देहरादून, 2015
13. पर्वत जन पत्रिका : देहरादून, 2005
14. युगवाणी पत्रिका 2017 : नैनीताल
15. स्मारिका : श्री नन्दा देवी महोत्सव, नैनीताल, 2005
16. बेलवाल सुचिता : कुमाऊँ की लोक परम्पराओं के गीतों का सांगीतिक विवेचन, शोध ग्रन्थ, 2013
17. पाण्डेय गीता : कुमाऊँ में प्रचलित मांगलिक गीत (शकुनाखर) एक ऐतिहासिक अध्ययन, शोध ग्रन्थ, 2013
18. साह बिशना, कुमाऊँ के मेलों का सामजिक, सांकृतिक तथा आर्थिक अध्ययन, शोध ग्रन्थ, 2008
19. श्रीमती कबूतरी देवी जी, क्वीतड़, पिथौरागढ़ : दिनांक – 23/01/2018
20. श्रीमती हेमंती देवी, कुमडार, पिथौरागढ़ : दिनांक – 25/01/2018
21. श्री हेमंत बिष्ट, तिलढुकरी, पिथौरागढ़ : दिनांक – 19/01/2018
22. जहूर आलम जी, मल्लीताल, नैनीताल : दिनांक – 01/01/2018
23. श्री गोपू बिष्ट, गंगोलीहाट : दिनांक – 27/12/2017
24. श्री नीरज भट्ट, अल्मोड़ा : दिनांक - 28/12/2017
25. श्रीमती उमा भट्ट, तल्ली डांडा, नैनीताल : दिनांक – 03/01/2018
26. श्री अनिक कार्की, पिथौरागढ़ : दिनांक – 21/01/2018